कामेंग ई- पत्रिका

Copyright © 2024 by kameng.in**सम्पादक- डॉ. अंजु लता**

ALL RIGHTS RESERVED

इस पत्रिका के किसी भी भाग को प्रकाशक की पूर्वलिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से पुनरुत्पादित, वितरित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है|

No part of this Journal may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means without the prior written permission of the publisher.

ISSN:

खंड -1

अंक-1

वर्ष : जनवरी-जून,2024

To visit the official website of Kameng e-Journal https://kameng.in/index.php

प्रकाशक

डॉ. अंजु लता

कामेंग प्रकाशन समूह

नपाम, तेजपुर,शोणितपुर, असम,पिन-784028

Kameng.ejournal@gmail.com

सम्पादकीय कार्यालय

कामेंग ई- पत्रिका

कामेंग प्रकाशन समूह

नपाम, तेजपुर, असम

सम्पर्क-7002306921/8135073278

www.kameng.in

आवरणपृष्ठ – डुबरी दास

कामेंग ई-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचार लेखक के अपने विचार हैं।इस से सम्पादकीय पक्ष का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।सभी कानूनी विवादों का न्यायिक क्षेत्र तेजपुर जिला न्यायालय, असम के अधीनस्थ हैं

सम्पादकीय

जीवन में आस्था नैतिकता और जिम्मेदारियों का बहुत महत्व होता है। – इन सब के लिए व्यक्ति लगातार अपने आस पास के संसाधनों से सहायता लेता है। इन संसाधनों में से साहित्य भी एक माध्यम है जो समाज को एक दिशा प्रदान करने की क्षमता रखता है। एक ऐसे समय में जब पूरे विश्व में युद्ध, हत्याओं और हिंसा का नया इतिहास लिखा जा रहा हो तो व्यक्ति की जिम्मेदारिया बढ़ जाती हैं। इतिहास साक्षी रहा है कि जब समाज नये परिवर्तनों के दौर से गुजरता हैतो साहित्य भी अपनी पक्षधरता निर्मित करता है। इन्हीं तथ्यों के आधार पर कामेंग पत्रिका के संपादन की योजना तैयार की गयी है। पिछले पंद्रह वर्षों से पूर्वोत्तर भारत में काम करने के दौरान यहाँ के समाज और साहित्य के साथ संबंध लगातार गहरा होता चला गया। यहाँ के साहित्य से हिंदी का समाज लगभग अनजान रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए कामेंग पत्रिका के संपादन की जिम्मेदारी ली गयी है। इस पत्रिका का नाम अरूणांचल की नदी के नाम पर रखा गया इसके पीछे की मंशा सिर्फ इतनी है कि लोग ना सिर्फ यहाँ के साहित्य और समाज से वाकिफ हों वरन् यहाँ की भौगोलिक संरचना को भी जानें। निश्चित रूपसे यह पत्रिका पूर्वोत्तर भारत के साहित्य समाज के साथ साथ यहाँ हिंदी के शोधार्थियों को एक मंच प्रदान करेगा। लंबे समय तक हाशिए पर धकेल दिये गये समाज को मुख्य धारा का हिस्सा बनने में काफी कोशिशे करनी पड़ती हैं। इस क्रम में हमारा यह प्रयास रहेगा कि पूर्वोत्तर का साहित्य और सामाजिक गतिविधियाँ हिंदी भाषी जनता के लिए सुलभ हो। इस तरह बहुआयामी और बहुरंगी सपनों को लेकर कांमेग समूह इस पत्रिका का पहला अंक लेकर आ रहा है। उम्मीद है हमारा यह प्रयास जल्दी ही पुष्पित पल्लवित होगा।

डॉ. अंजु लता
सम्पादक, कामेंग ई- पत्रिका

संरक्षक के सन्देश

'कामेंग' सिर्फ एक शब्द नहीं है; यह मानव सभ्यता के विकास क्रम और गतिशीलता का एक प्रमाण है, जो हमारे इतिहास की रगों में बहने वाले संघर्ष, विजय और एकता की विजयघोष को समाहित करता है। 'कामेंग' नदी, अरुणाचल प्रदेश के तवांग जिले में गौरी सेन पर्वत से निकलती है, जो सीमाओं, संस्कृतियों और सभ्यताओं को एकाकार करते हुए अपने लक्ष्य की ओर गतिशील बनती है। जिस प्रकार 'कामेंग' नदी महाबाहु ब्रह्मपुत्र में एकाकर हो जाती है, जो विविध संस्कृतियों और सभ्यताओं के मिलन का प्रतीक है, उसी प्रकार कामेंग ई-पत्रिका भी विचारों, दृष्टिकोणों और प्रगतिशील स्वर के संगम का प्रयास करता है। 'कामेंग' नदी का ऐतिहासिक महत्व, विशेष रूप से 62 के भारत-चीन युद्ध के दौरान, अपनी मातृभूमि की रक्षा में वीर सैनिकों द्वारा किए गए बलिदानों की मार्मिक याद दिलाता है। यह साहस और वीरता की अदम्य भावना का एक साक्ष्य है, जो समय के इतिहास में गूंजता है। इसके अलावा, 'कामेंग' नाम अपने आप में गहरा अर्थ रखता है, जो भाषा, साहित्य और समाज के विकास को दर्शाता है। यह मानव सभ्यता के भीतर निहित निरंतर प्रगति और परिवर्तन को दर्शाता है, जीवन की बदलती धाराओं को प्रतिध्वनित करता है। कामेंग ई-पत्रिका के संरक्षक के रूप में, मैं अखंडता, समावेशिता और उत्कृष्टता के सिद्धांतों द्वारा विकसित, इस साहित्य धारा में हिस्सा बनने के हेतु अवसर पाकर अभिभूत हूं। आइए हम मिलकर 'कामेंग' की समृद्धमय विचार धारा का सम्मान करें - जो गतिशीलता, एकता और प्रगति का प्रतीक है | आइए कामेंग के साहित्य यात्रा का हिस्सा बनें और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उज्जवल साहित्यिक और सांस्कृतिक भविष्य का निर्माण करें।

प्रो. अनंत कुमार नाथ
संरक्षक, कामेंग ई-पत्रिका